

उमेश कुमार चौरसिया के नाटकों में मूल्यबोध

बलदेव राम¹, डॉ. राजेश कुमार शर्मा²

¹शोधार्थी, हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर
²एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

Values in the Plays of Umesh Kumar Chaurasia
Baldev Ram¹, Dr. Rajesh Kumar Sharma²

¹Research Scholar, Hindi Department, Bhagwant University, Ajmer

²Associate Professor, Hindi Department, Bhagwant University, Ajmer

सारांश

नाट्य क्षेत्र में चर्चित व बहुमुखी प्रतिभा के धनी उमेश कुमार चौरसिया ने नाटकों को नवीन दिशा दी है, विशेष रूप से बाल साहित्य में। राजस्थानी नाटककारों में भी इन्होंने अपनी पहचान बनाई है। उमेश कुमार चौरसिया ने अपनी लेखनी से मां शारदे के भंडार में श्रीवृद्धि करते हुए नाट्य रचनाएं, व्यंग्य, कविता, गीत आदि की रचना की है। हमारे देश में राष्ट्र चेतना में जिन साहित्यकारों ने जन-जन एवं युवमन में नवजागरण की प्रेरणा जागृत कर अपनी राष्ट्र भक्ति, मूल्यबोध का परिचय दिया, उनमें अजमेर के नाटककार, रंगकर्मी उमेश कुमार चौरसिया का नाम उल्लेखनीय है।

चौरसिया जी का साहित्य अन्य राजस्थानी हिंदी लेखकों के साहित्य से कई मायनों में भिन्न व महत्वपूर्ण है। संयोगवश जब मैंने चौरसिया जी के देश भक्ति व शौर्य प्रधान नाटकों को पढ़ा, उसी समय मेरा मन चौरसिया जी की सृजनशीलता, विचारधर्मिता, राष्ट्रबोध, कथानक व भाषा का गवेषण, भाषा का खूबसूरतपन आदि ऐसे अनेक बिंदु रहे, जिन्होंने सहज ही मुझे वैचारिक मंथन के लिए विवश किया और मुझे प्रेरित किया कि चौरसिया जी की अन्य कथात्मक रचनाओं के बारे में जानूं और शोधपरक कार्य करूं। चौरसिया ने अपने नाटकों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना व मूल्यबोध जैसे विषयों को संजोया है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति अपने आप में अनूठी थी और रहेगी। फिर भी अभी भारतीय संस्कृति जिन मूल्यों, आदर्शों के लिए सुविख्यात रही है, उनसे धीरे-धीरे किनारा करती जा रही है। इसी दर्द को जीवंत नाटककार उमेश कुमार चौरसिया ने जाना, परखा और अपनी लेखनी से कलमबद्ध करते हुए मूल्य बोध कराया।

मुख्य शब्द: – नाटककार, लेखनी, भारतीय सभ्यता व संस्कृति

एक विशेष सामाजिक संरचना के सदस्यों के बीच अंतःक्रियाओं के परिणामस्वरूप मूल्य धीरे-धीरे सामने आते हैं। वास्तव में, मनुष्य को अपनी स्थिति और पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। उसे अपने समाज या समूहों के अन्य लोगों के साथ सामाजिक जीवन में भाग लेना होता है, उसे अपने व्यक्तित्व और संस्कृति के बीच आदान-प्रदान की प्रक्रिया में भाग लेना होता है, साथ ही उसे अपने निर्वाह और रखरखाव से संबंधित समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।

ऐसी स्थिति में, समाज को अव्यवस्था, असुरक्षा और अशांति से बचाने के लिए, कुछ वरीयताओं, मानदंडों और सामूहिक इच्छाओं को समाज द्वारा व्यवहार के आधार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। समाज में अराजकता की स्थिति से बचने के लिए ही समाज द्वारा मान्यता प्राप्त कुछ मानदंडों, इच्छाओं और लक्ष्यों को विकसित किया जाता है, और वे समाज में प्रचलित रहते हैं। जिसे व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान अपने व्यक्तित्व में समाहित कर लेता है।

इसलिए मनुष्य अपने जीवन से, अपने परिवेश से, स्वयं, समाज और संस्कृति से ही नहीं, बल्कि मानव अपने आप में सीमित होने लगी है। अपने ही व्यक्तित्व में वह सिमटने लगा, सिकुड़ने लगा। स्वार्थी प्रवृत्तियां उत्पन्न हुईं जिसके कारण नैतिकता लुप्त हो गई। समकालीन कविता इन मूल्य परिवर्तनों और इसके परिणामस्वरूप होने वाले परिणामों की प्रतिक्रिया है। आज हमारा देश विश्वगुरु बनने की ओर बढ़ रहा है,

वहीं दूसरी ओर देश में फल-फूल रही सांप्रदायिकता, भाषावाद जैसी प्रवृत्तियां राष्ट्रीय चेतना के लिए मारक साबित हो रही हैं।

ऐसी विकृतियों के दम पर सत्ता पाने वाले भी कम नहीं हैं। आज राजनीति गुंडों का अखाड़ा बन गई है। हमारी संसद जनता के सवाल को हल करने के बजाय पैसा कमाने का जरिया बन गई है। सत्ता हथियाकर राजनीति के गलियारों में भ्रष्ट आचरण में लिप्त कई कलंकित चेहरे यहां शान से घूमते नजर आएंगे। धर्म और जाति के नाम पर वोट बैंक खोलो, अपने कर्तव्यों से भटके हुए नेता इस देश को किस रास्ते पर ले जाएंगे?

धर्म की स्थापना के लिए किए गए युद्धों की प्रशंसा हमारे कई धार्मिक ग्रंथों में मिलेगी। हमने धर्म के नाम पर जानवर बनकर इंसानों का खून बहाया। इतना ही नहीं इस तरह के कुकर्म करने वालों को संसद तक ले जाकर बैठाया। उमेश कुमार चौरसिया जिसे कालांतर में नाटककार के नाम प्रसिद्धि मिली है उनके सभी नाटकों में मूल्यबोध मिलता है।

प्रसिद्ध नौटंकी कलाकार उमेश कुमार चौरसिया ने इस विधा को लोकप्रिय बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नाटककारों में इनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। उमेश कुमार चौरसिया के नाम की बुलंदी आज भी आकाश को स्पर्श करती प्रतीत होती है, नाटकों में इन्होंने परंपरा को निरंतर प्रवाहमय बनाए रखा।

अजमेर के प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार और नाटककार उमेश कुमार चौरसिया को राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से नाटक शैली के लिए राज्य के प्रतिष्ठित 'देवीलाल समर पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। उन्हें यह पुरस्कार लोकप्रिय नाटक 'शौर्य प्रधान नाटक' के लिए मिलेगा। अकादमी के विभिन्न पुरस्कारों की घोषणा करते हुए अध्यक्ष डॉ. इंद्रेश्वर तृपाठी ने कहा कि ये पुरस्कार 4 अक्टूबर को उदयपुर में एक भव्य समारोह में प्रदान किए जाएंगे।

चौरसिया के इस नाटक में चौहान, वीरांगना पन्नाधाय, खूब लड़ी मर्दानी, ओवा तुझे प्रणाम और दहरसेन का बलिदान जैसे पाँच रोचक और प्रभावशाली नाटक शामिल हैं। इनमें अजमेर के सम्राट पृथ्वीराज चौहान, जिन्होंने मुगल गौरी से लड़ाई लड़ी, मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने बेटे की बलि देने वाली नारिका पन्नाधाय, रानी लक्ष्मीबाई और 1857 की क्रांति के अदम्य ठाकुर खुशाल सिंह, जिन्होंने अंग्रेजों से आजादी के लिए लड़ाई लड़ी और सिंह की रक्षा के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया।

दहरसेन की वीरतापूर्ण कहानियों का चित्रण किया गया है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में कार्यरत उमेश कुमार चौरसिया ने अब तक 65 से अधिक हिंदी और राजस्थानी नाटकों की रचना की है, इनमें से अधिकांश नाटकों का देश भर में कई प्लेटफार्मों पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया है। उन्होंने 19 नाटक और 11 संपादित पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

हाल ही में उनके बच्चों का नाटक मेघावी नरेंद्र नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया गया है। चौरसिया को 2012 में बाल साहित्य अकादमी के 'शंभूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार' और भारतेन्दु देवसर ट्रस्ट द्वारा 'राष्ट्रीय युवा साहित्य पुरस्कार 2005' सहित कई राष्ट्रीय और राज्य स्तर के पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

उमेश कुमार चौरसिया ने कहा कि शिक्षा सिर्फ डिग्री हासिल करने तक सीमित नहीं है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को बच्चों को पढ़ाने के लिए कम समय मिलता है। इसका कारण यह है कि भारत धीरे-धीरे विश्व गुरु के स्थान से दूर होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि अगर हमें वह स्थान फिर से प्राप्त करना है तो शिक्षा में मूल्य बोध को शामिल करना होगा। प्राथमिक से उच्च स्तर तक शिक्षा की कमी को दूर करना होगा।

अपने आप में सीमित होने लगी है। अपने ही व्यक्तित्व में वह सिकुड़ने लगा, सिकुड़ने लगा। स्वार्थी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हुई जिसके कारण नैतिकता लुप्त हो गई। समकालीन कविता इन मूल्य परिवर्तनों और इसके परिणामस्वरूप होने वाले परिणामों की प्रतिक्रिया है। आज हमारा देश विश्वगुरु बनने की ओर बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर देश में फल-फूल रही सांप्रदायिकता, भाषावाद जैसी प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय चेतना के लिए मारक साबित हो रही हैं। ऐसी विकृतियों के दम पर सत्ता पाने वाले भी कम नहीं हैं। आज राजनीति

गुंडों का अखाड़ा बन गई है। हमारी संसद जनता के सवाल को हल करने के बजाय पैसा कमाने का जरिया बन गई है। सत्ता हथियाकर राजनीति के गलियारों में भ्रष्ट आचरण में लिप्त कई कलंकित चेहरे यहाँ शान से घूमते नजर आएंगे। धर्म और जाति के नाम पर वोट बैंक खोलो, अपने कर्तव्यों से भटके हुए नेता इस देश को किस रास्ते पर ले जाएंगे? धर्म की स्थापना के लिए किए गए युद्धों की प्रशंसा हमारे कई धार्मिक ग्रंथों में मिलेगी। हमने धर्म के नाम पर जानवर बनकर इंसानों का खून बहाया। इतना ही नहीं इस तरह के कुकर्म करने वालों को संसद तक ले जाकर बैठाया। उमेश कुमार चौसिरिया जिसे कालांतर नाटककार के नाम प्रसिद्धि मिली है उनके सभी नाटकों में मूल्यबोध मिलता है। प्रसिद्ध नौटंकी कलाकार उमेश कुमार चौसिरिया ने इस विधा को लोकप्रिय बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, नाटकों में इनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। उमेश कुमार चौसिरिया को नाम की बुलंदी आज भी आकाश को स्पर्श करती प्रतीत होती है, नाटकों में इन्होंने परंपरा को निरंतर प्रवाहमय बनाए रखा।

ओमेर के प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार और नाटककार उमेश कुमार चौसिरिया को राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से नाटक शैली के लिए राज्य के प्रतिष्ठित 'देवीदास समर पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। उन्हें यह पुरस्कार लोकप्रिय नाटक 'शौर्य प्रधान नाटक' के लिए मिलेगा। अकादमी के विभिन्न पुरस्कारों की घोषणा करते हुए अध्यक्ष डॉ. इंद्रेश्वर तल्पपुष्प ने कहा कि ये पुरस्कार 4 अक्टूबर को उदयपुर में एक भव्य समारोह में प्रदान किए जाएंगे। चौसिरिया के इस नाटक में चौहान, वीरांगना पन्नाधाय, खूबसूरत लड़ी मर्दानी, ओबा तुझे प्रणाम और देहसन का बलिदान न चुके, ये पाँच रोचक और प्रभावशाली नाटक शामिल हैं। इनमें अजमेर के सम्राट पृथ्वीराज चौहान, जिन्होंने मुगल गौरी से लड़ाई लड़ी, मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने बेटे की बलि देने वाली नायिका पन्नाधाय, रानी लक्ष्मीबाई और 1857 की क्रांति के अमर सपूत ठाकुर खुशाल सिंह, जिन्होंने अंग्रेजों से आजादी के लिए लड़ाई लड़ी और सिंह की रक्षा के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। देहसन की वीरतापूर्ण कहानियों का चित्रण किया गया है।

उल्लेखनीय है कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में कार्यरत उमेश कुमार चौसिरिया ने अब तक 65 से अधिक हिंदी और राजस्थानी नाटकों की रचना की है, इनमें से अधिकांश नाटकों का देश भर में कई प्लेटफार्मों पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया है। उन्होंने 19 नाटक और 11 संपादित पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

हाल ही में उनके बच्चों का नाटक 'मेधावी नरेंद्र' नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया गया है। चौसिरिया को 2012 में बाल साहित्य अकादमी के 'शंभुदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार' और भार्गव देवधर ट्रस्ट द्वारा राष्ट्रीय युवा साहित्य पुरस्कार 2005 सहित कई राष्ट्रीय और राज्य स्तर के पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

उमेश कुमार चौसिरिया ने कहा कि शिक्षा सिर्फ डिग्री हासिल करने तक सीमित नहीं है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को बच्चों को पढ़ाने के लिए कम समय मिलता है। इसका कारण यह है कि भारत धीरे-धीरे विश्व गुरु के स्थान से दूर होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि अगर हमें वह स्थान फिर से प्राप्त करना है तो शिक्षा में मूल्य बोध को शामिल करना होगा। प्राथमिक से उच्च स्तर तक शिक्षा की कमी को दूर करना होगा।

निष्कर्ष

आज हमारे समाज में विषमता और विकृतियां अपने चरम पर हैं। एक ओर अर्थव्यवस्था की निर्भरता ने अमीर-गरीब के बीच की खाई को पाटने का काम किया, वहीं दूसरी ओर जनता के मन की विकृतियां इन दोनों छोरों पर अपना डेरा बनाने लगीं। जो व्यक्ति असंवेदनशील होता जा रहा है, उसे फिर से चेतावनी देने का काम साहित्य कर रहा है। संपूर्ण विश्व विभिन्न असंतोषों की विनाशकारी छाया से घिरा हुआ है। ऐसे में भविष्य के विनाश को रोकने के साथ-साथ साहित्य मन और मस्तिष्क को फिर से मूल्यों की ओर मोड़ने का एक उपयुक्त माध्यम साबित हो सकता है। वास्तव में मूल्य ऐसे तत्व हैं, जो जीवन को परिष्कृत करते हैं। उमेश कुमार चौसिरिया ने अपने लेखन से अवमूल्यन की स्थिति पर तीखा प्रहार करना चाहा है। वह अपने नाटकों को परिवर्तन का हथियार मानते हैं। जहां आम आदमी खुद को कसौटी बनाकर उतर-चढ़ाव वाली स्थिति से गुजरता है, वहीं उमेश कुमार चौसिरिया ने सबसे पहले अपने विचारों की भूमि की

देखभाल करता है। समाज के प्रति अपनी जवाबदेही जानते हुए वह सजग रहते हैं। संयोगवश जब मैंने चौसिरिया जी के देश भक्ति व शौर्य प्रधान नाटकों को पढ़ा, उसी समय मेरा मन चौसिरिया जी की सृजनशीलता, विचारधारिता, राष्ट्रबोध, कथानक व भाषा का गवेषण, भाषा का खुदरापन आदि ऐसे अनेक बिंदु रहे, जिन्होंने सहज ही मुझे वैचारिक मंथन के लिए विवश किया और मुझे प्रेरित किया कि चौसिरिया जी की अन्य कथात्मक रचनाओं के बारे में जानूं और शोधपरक कार्य करूं। चौसिरिया ने अपने नाटकों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना व मूल्यबोध जैसे विषयों को संजोया है।

संदर्भ

1. तीन नाटक – सुरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ – 26
2. तीन नाटक – सुरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ – 84
3. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक – सुरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ – 75
4. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक – सुरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ – 75
5. आठवां सर्ग – सुरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ – 19
6. डॉ. राजेंद्र शर्मा – नैतिक मूल्य शिक्षा – पृष्ठ 26
7. सं. डॉ. धर्मपाल मेनी – मानवमूल्य कोश
8. कुमार अंबुज, कन्यादान, समकालीन भारतीय साहित्य – जन-फरवरी 2006
9. अरुण कमल, सबूत – पृष्ठ 66
10. राजकमल चौधरी – विचित्रा – पृष्ठ 126
11. बृज नारायण – शब्ददीपिका – पृष्ठ 79
12. अग्निशेखर – जवाहर टनल – पृष्ठ 62
13. भगवत रावत – ऐसी कैसी नींद – पृष्ठ 24
14. सपना चमडिया – बेटियां – समकालीन भारतीय साहित्य – जनवरी-फरवरी – पृष्ठ 182-183

